मैथिली शरण गुप्त और कुवेंपु के रामायण संबंधी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. S. Shobana
Asst. Prof, Department of Hindi
MMK SDM MAHILA MAHAVIDYALAYA,
Mysuru
Ph:9886203416
E-mail: shobanavaidya@gmail.com

मूल शब्द: मैथिली शरण गुप्त, कुवेंपु, रामायण संबंधी काव्य, तुलनात्मक अध्ययन, हिंदी राम काव्य, कन्नड़ राम काव्य।

प्रस्तावना: भारतीय काव्य परंपरा में रामायण संबंधी काव्या ने हमेशा अपना विशेष स्थान बनाए रखा है। रामायण संबंधी काव्य का अनुवाद या मूल रचना का पुनः रचना भारतीय भाषाओं में हुआ है और हो रहा है। भारतीय भाषाओं में जब रामायण संबंधी काव्य का रचना होती है तब कई भारतीय भाषाओं ने अपनी विशेषताओं के साथ इस काव्य को पुनः प्रेषित करने का प्रयास किया है। इस विशेषता ही उनकी अनोखेपन को भी दर्शाती हैं। कन्नड़ भाषा में रामायण की रचना महाकवि कुवेंपू ने किया है अपनी अनोखी विशेषताओं के साथ । उसकी तुलना मैथिलीशरण गुप्त की रामायण काव्य के साथ इस आलेख में करने का प्रयास किया गया है।

मैथिली शरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त 1886 को चिरगांव झांसी उत्तर प्रदेश में एक वैश्य परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम सेठ रामचरण गुप्त और माता का नाम श्रीमती काशीबाई था। राम भक्त और काव्य के प्रतिभा उन्हें अपने पिता से विरासत में मिली थी क्योंकि उनके पिता राम भक्त थे। इन्हें अंग्रेजी पढ़ने के लिए झांसी भेजा गया था, वहां इनका मन पढ़ाई लिखाई में ना लगा वापस लौट आए बाद में पुनः घर पर ही उनकी शिक्षा का प्रबंध हुआ। जहां इन्होंने अंग्रेजी, संस्कृत और हिंदी का अध्ययन किया मैथिली शरण गुप्त 12 दिसंबर 1964 को मृत्यु हो गई। हिंदी कविता के इतिहास में गुप्त जी का योगदान सबसे बड़ा है पवित्रता, नैतिकता और परंपरागत मानवीय संबंधों की रक्षा गुप्त जी के काव्य में प्रथम गुण है। साकेत श्री राम कथा पर आधारित है किंतु इसके केंद्र में लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला है। साकेत में कवि ने उर्मिला और लक्ष्मण की दाम्पत्य जीवन की हृदय स्पर्शी प्रसंग का तथा उर्मिला की विरह दशा का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है। साथ ही कैकेई के पश्चाताप को दर्शाकर उसके चरित्र का मनोवैज्ञानिक एवं उज्जवल पक्ष प्रस्तुत किया है। साकेत 1931 में प्रकाशित कुल 12 सर्ग की महाकाव्य है। महाकाव्य की परंपरा में ' रामचरित चिंतामणि' के बाद मैथिलीशरण गुप्त के साकेत का नाम आता है। यह एक सरगबद्ध रचना है। साकेत हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है साकेत प्रबंध काव्य है उसकी शैली भी प्रबंधात्मक है। काव्य की भाषा खड़ीबोली है। इस काव्य की कथा उर्मिला और लक्ष्मण के सहयोग सुख से प्रारंभ होती है और वनवास के बाद समाप्त हो जाती है। साकेत 12 सर्गो का महाकाव्य तथा वृहदप्रबंध काव्य है। साकेत का कथानक राम कथा पर आधारित है लेकिन राम कथा का वर्णन करना कवि का उद्देश्य नहीं है। साकेत का मुख्य उद्देश्य राम कथा में अपेक्षित पत्रों को प्रकाश में लाना है । आचार्य नंद दुलारे वाजपेई के शब्दों में साकेत महाकाव्य ही नहीं, यह आधुनिक हिंदी का युग प्रवर्तक महाकाव्य है । मैथिलीशरण गुप्त को आधुनिक काल का तुलसीदास स्वीकार किया गया है। गुप्त जी ने नारी को भारतीय आदर्श में डालने की चेष्टा की है। भौतिक पक्ष में नारी रति का प्रतिरूप है। वह विश्व की मधुर

कल्पना है। अतः नारी पुरुष की अनिवार्य आवश्यकता है। हृदय की विशालता तथा सहानुभूति उसके आभूषण रहे हैं। अतः ऐसी नारी का चरित्र प्रधान काव्य है साकेत। उसमें उर्मिला का चरित्र कथा से संबंधित अन्य पात्रों के बीच विकसित होता है। आरंभिक सर्गों में श्री राम को वनवास का आदेश, अयोध्या वासियों का करुण रुदन और वन गमन की कई झांकियां है। अंत के सर्गों में लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला के वियोग का वर्णन है। साकेत मुख्यतः उर्मिला के केंद्र में रखकर लिखा गया है। क्योंकि लक्ष्मण तो अपने भाई और भाभी के साथ वन चले जाते हैं लेकिन उर्मिला अपने ससुराल में ही रहती है। उन्हीं की मनस्थिति का वर्णन कवि ने किया है-

"मानस मंदिर में सती, पति की प्रतिमा थाप
जलती सी उसे विरह में, बनी आरती आप ।"

अर्थात उर्मिला के मन में अपने पति की ही प्रतिमा है वह विरह से व्याकुल है और वह किसी आरती की लौ के सम्मान स्वयं ही जल रही हैं।
मैथिलीशरण गुप्त जी ने साकेत के नवम सर्ग में उर्मिला के विरह पीड़ा को व्यक्त किया है। सीता प्रभू श्रीराम के साथ साकेत से चित्रकूट में आ गई और वहीं आकर सानन्द रहने लगती है किन्तु उर्मिला को भीषण वियोग सहना पड़ा। नवम सर्ग की सभी कथा उर्मिला के अश्रुओं से गीली है। उर्मिला अपने मन मंदिर में अराध्य स्वामी की प्रतिष्ठा करके स्वयं आरती की ज्वाला बन कर जल रही थी अतीत के स्मृतियों की करुणा से भरी वेदना, अभिलाषा एवं अप्राप्य प्रेम का संसार एवं ऐसी अपूर्ण स्थिति जिसमे संतुष्टि मात्र का एक प्रतिशत भी न हो। श्रृंगार परक वस्तुएँ उसकी विरहा की अग्नि को प्रज्ज्वलित करने में ईंधन के समान है। वह अपने मन के मंदिर में प्रिय की प्रतिमा स्थापित कर सम्पूर्ण भोगों को त्यागकर अपना जीवन योगमय बना लेती है।

"मानस मंदिर में सती, पति की प्रतिमा थाप,

जलती थी उस विरह में, बनी आरती आप,

आँखों में प्रिय मूर्ति थी, भूले थे सब भोग'

हुआ योग से भी अधिक उसका विषम वियोग।"

भारतीय संस्कृति में नारी जाति को जिन चरित्रों से गरिमा और दीप्ती मिली है उसमे उर्मिला का स्थान अग्रगन्य है। कूल मिलाकर भाव और कला दोनों ही दृष्टियों से साकेत का नवम सर्ग अत्यंत उच्चकोटि का है। श्रेष्ठ काव्य के सभी गुणों से अभिमंडित है।

गुप्त जी का एक और रामकथा पर आधरित खण्डकाव्य 'पंचवटी' भी इसी श्रेणी में आता है। इसे लगभग 13 खण्डों में लिखा गया है। शुरुआती भाग में राम-सीता के साथ लक्ष्मण के वनगमन का दृश्य है और इसके बाद लक्ष्मण का स्वयं से संवाद जिसमें वह पंचवटी की शांत प्रकृति में कई विचार कर रहे हैं। कहीं वे वनवास के बीते बर्षों के बारे में सोचते हैं, तो कहीं आने वाले समय के बारे में। इस सम्पूर्ण प्रसंग की एक सुंदर झांकी महाकवि मैथिलीशरण गुप्त ने यूं प्रस्तुत की है-

राजा दशरथ अपने दिये वचन के आगे विवश हैं और उनकी आज्ञा पाकर राम सब कुछ छोड़कर वन की ओर चल दिए। उनके पीछे सीता भी चली गयीं। जब लक्ष्मण भी साथ चलने लगे तो राम ने कारण पूछा। भाभी सीता ने कहा कि श्रीराम तो पिता की आज्ञा के कारण सब कुछ छोड़कर जा रहे हैं। तुम क्यूं राज्य से मुंह मोड़ रहे हो और त्यागी बन रहे हो। इस पर लक्ष्मण कहते हैं कि आप मुझे त्यागी न बनाएं और भैया की सेवा में अपना हिस्सेदार बनाएं।
लक्ष्मण ने अपने वनगमन के लिए जब तर्क दिए तो सीता उनका यह प्रेम देखकर मुस्काने लगीं तो राम की आंखों में पानी आ गया। इसके बाद तीनों जन पंचवटी पहुंच चुके हैं, वहां अपनी कुटिया बनाई। वहां की प्रकृति का कवि ने बहुत सुंदर वर्णन किया है। चारों तरफ़ निर्मल चांदनी है, चांद का प्रकाश जल में प्रतिबिम्बित हो रहा है। हरी घास आनंद दे रही है। हरे पेड़ हवा से झूम रहे हैं
पंचवटी वन की छाया में सुंदर कुटिया बनी है। रात्रि के समय एक स्वच्छ शिला पर वहां एक वीर खड़ा है। आख़िर यह कौन धनुर्धर है जो जाग रहा है। किसी स्वर्ण फूल सा योगी जैसा दिखाई देता है। आख़िर इसने क्यूं निद्रा का त्याग किया हुआ है। इसे राज्य के सुंदर उपवन में कोई रुचि नहीं है। आख़िर उस कुटी में ऐसा कौन सा धन है जो यह जाग कर उसका प्रहरी बना हुआ है।
उस कुटी में अंदर क्या है इसे बताते हुए कवि कहते हैं कि जो तीन लोक की लक्ष्मी है वह इस कुटिया में है। जिसने इस मृत्युलोक अर्थात् पृथ्वी पर अपने स्वामी अर्थात् विष्णु अर्थात् राम के साथ अवतार लिया है। उनकी रक्षा के लिए भी किसी वीर की ही आवश्यकता होगी।
इसके आगे कवि लक्ष्मण की मनोदशा बताते हैं कि जब कोई पास न हो तब भी मन मौन नहीं रहता। अपनी बात कहता है और सुनता है। इसी तरह लक्ष्मण भी इधर-उधर दृष्टि डालकर मन ही मन बातें सोच रहे हैं।
इसके बाद लक्ष्मण वनवास के बीते 13 वर्षों के बारे में सोचते हैं कि अब जल्द ही अवधि पूरी होने वाली है। इसके बाद वह बड़े भाई राम के बारे में सोचने लगते हैं, बड़े भाई श्रीराम जब राज्य के कार्यों में व्यस्त हो जाएंगे तो वह भी व्यस्त हो जाएंगे। वह न चाहते हुए भी विवशता में हमें भूल जाएंगे। लेकिन चूंकि वह इसके माध्यम से लोगों का उपकार करेंगे इसलिए यह सोचकर हमें कोई शोक नहीं होगा।
मझली मां अर्थात् कैकेयी ने सोचा था कि वह राजमाता बन जाएंगी और राम को राजमहल से बाहर कर देंगी। लेकिन चित्रकूट में उन पर बहुत करुणा आयी।सब कैकेयी को देखते थे परंतु वह स्वयं को नहीं देख सकती थीं। चूंकि भरत भी त्यागी हो गए थे। लक्ष्मण गहन विचार करते हैं कि अगर जीवन का लक्ष्य राजपाठ ही होता तो हमारे पूर्वज वन का मार्ग कभी नहीं लेते। इन प्रसंगों से पंचवटी खंड काव्य खत्म होती हैं।

राष्ट्र कवि कुवेम्पु- विश्व के इस हिस्से में शायद ही कोई व्यक्ति इस महान व्यक्तित्व के बारे में नहीं जानता होगा।
आधुनिक कन्नड़ साहित्य के एक प्रमुख कवि को उपयुक्त रूप से राष्ट्रकवि की उपाधि से सम्मानित किया गया, जो किसी भी भाषा के लिए उनके जीवनकाल तक केवल एक ही व्यक्ति को प्रदान की जाएगी।
अपनी उत्कृष्ट कृति महाकाव्य श्रीरामायण दर्शनम के लिए केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार और कन्नड़ में ज्ञानपीता पुरस्कार पाने वाले पहले व्यक्ति।

1904 दिसंबर 29 को शिमोगा जिले के मलनाड के एक छोटे से गांव कुप्पाली में एक साधारण बड़े किसान संयुक्त परिवार में जन्मे।
अपनी औपचारिक शिक्षा मैसूर विश्वविद्यालय से की।

उस दौरान बीएम श्री और अन्य लोगों से बेहद प्रभावित हुए, शुरुआत में अंग्रेजी में लिखना शुरू किया लेकिन एक अंग्रेज जेएच कजिन्स ने उन्हें मातृभाषा में लिखने के लिए प्रेरित किया...

साहित्य की शायद ही कोई धारा हो जिसे राष्ट्रकवि कुवेम्पु ने न छुआ हो - नाटक- शमशान कुरुक्षेत्रम, बेराल्गे कोरल, स्वामी विवेकानन्द और रामकृष्ण परमहंस की जीवनियाँ, नविलु, पक्षिकाशी, अनिकेतन आदि सहित असंख्य काव्य संग्रह, टिप्पणियाँ, लघु कथाएँ, गद्य आदि।
नाद गीते जय भारत जननीय तनुजते... सहित देशभक्ति गीत।
कन्नड़ में एक कहावत है - आदु मुत्तदा सोपिला, कुवेम्पु मुत्तदा राचेनिल्ला
मोटे तौर पर इसका अनुवाद करने का मतलब है कि जिस तरह से एक बकरी किसी भी घास या पत्ते को अछूता नहीं छोड़ती है, शायद ही कुवेम्पु ने साहित्य के किसी भी रूप को अछूता नहीं छोड़ा है।

इन सभी में से श्री रामायण दर्शनम इस उत्कृष्ट कवि की उत्कृष्ट कृति रहेगी।
कुवेम्पु के काम में एक और दिलचस्प पहलू यह है कि उनके करियर के शुरुआती चरण के दौरान उनके अधिकांश काम कन्नड़ केंद्रित थे जैसे 'जया जया कर्नाटक, जया कर्मकाटक मते या बारिश कन्नड़ डिंडिमावा और अन्य जैसे-जैसे वे आगे बढ़े, उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से एक बयान दिया कि वह हैं। वह अपनी कविताओं जैसे - जया भारत जननीय तनुजाते जय हे कर्नाटक माते और भारतम्बेय जानिसी निन्नोलु दन्यादानु देवियें सहित अन्य कविताओं के माध्यम से एक कन्नड़ होने के साथ-साथ एक भारतीय भी हैं।
समय के साथ जैसे-जैसे वह परिपक्व हुए, उन्होंने ऐसे बयान भी दिए जिससे दुनिया को पता चला कि वह उतने ही वैश्वीकृत हैं जितना कि वह भारतीय हैं और अपने कार्यों के माध्यम से "मनुजा माता विश्व पथ" और "ओ नन्न चेतना आगू नी अनिकेतन" का उद्घोष करते हैं। केवल एक ही धर्म है जो मानव है और एकमात्र मार्ग है जो वैश्विक पथ है और युवाओं को सभी सीमाओं और सभी विभाजनों को पार करते हुए विश्वमानव बनने के लिए आह्वान करता है और उचित रूप से "विश्व मानव कवि" उपनाम अर्जित करते है।
राष्ट्रकवि कुवेम्पु के ``श्री रामायण दर्शनम" के महिला पात्रों की पृष्ठभूमि पर नजर डालें तो यह स्पष्ट है कि महिला या पुरुष, कोई भी स्त्री ``भावना" से प्रभावित हो सकता है। महिला सशक्तिकरण के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण कारक है। यह सत्य हे कि एक पुरुष एक महिला के मन को समझ सकता है, और यह सत्य कि वह उसके दर्द और भावनाओं के प्रति सहानुभूति रख सकता है, मन को सांत्वना देता है, जैसे-जैसे आप पढ़ते हैं, श्री रामायण दर्शनम् से नारी मन का दर्शन भी उजागर होता है।
वाल्मिकी से लेकर कुवेम्पु रामायण के चरित्र जगत में दिखाई देने वाले अधिकांश पुरुष ``स्त्री" स्वभाव के हैं। ``क्रौंच मिथुन" के अवसर पर जब नर पक्षी मर जाता है तो मादा क्रौंच का विलाप देखकर वाल्मिकी दुखी होते हैं। फिर वह अपनी कहानी सुनाकर व्याध को बदल देता है और वैवाहिक जीवन से मादा पक्षी की इच्छा को शांत करता है। यहीं से 'स्त्री संवेदना' का तत्व हम पर हावी होने लगता है।
विषयवस्तु वाल्मिकी की रामायण में राम की प्रसिद्ध कहानी है , जो कवि की दृष्टि में रूपांतरित है। रामायण दर्शनम में कुल मिलाकर 4 अध्याय हैं जिसमे 5 भाग में विभाजित किया गया है। इसमें कुल मिलाकर 22,291 कविताओं, जिसे महा छंदस में रचित किया गया है। कवि 'दर्शनम' कहता है, यह कवि की अनुभूति है कि सारी सृष्टि ब्रह्मांडीय मन द्वारा निर्मित, व्याप्त, कायम और संचालित होती है। रूपकों और होमरिक उपमाओं से भरपूर , कवि द्वारा पहली बार कन्नड़ में पेश किया गया, महाकाव्य इस सच्चाई को सामने लाता है कि सभी प्राणियों, यहां तक कि सबसे दुष्ट और पापी, का विकास होना और अंततः पूर्णता प्राप्त करना तय है।

उन्होंने उर्मिले, सीता, मंदोदरी जैसी महिला पात्रों को अधिक महत्व दिया है l स्त्री समानता का भाव इस काव्य में निरूपित किया गया है इसी कारण से श्री रामायणदर्शनम उतना सफल हुआ है। यहां तक उन्होंने भी उर्मिला को ही अपने काव्य की नायिका माना है और एक जगह पर वे लिखते है कि यदि मुझे दूसरे जन्म प्राप्त होगा तो मैं उर्मिला बनकर जन्म लेना चाहता हूं।

यदि हम श्री रामायण दर्शनम के महिला पात्रों की पृष्ठभूमि पर नजर डालें तो यह स्पष्ट है कि 'स्त्रीवेदनम' से पुरुष या महिला कोई भी प्रभावित हो सकता है। महिला सशक्तिकरण के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण कारक है। यह तथ्य कि एक ``पुरुष" एक महिला के मन को समझ सकता है, और यह तथ्य कि वह उसके दर्द और भावनाओं के प्रति सहानुभूति रख सकता है, आरामदायक है।

राम का जन्म कोशल साम्राज्य के शासक, कौशल्या और दशरथ के घर अयोध्या में हुआ था। उनके भाई-बहनों में लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न शामिल थे। उन्होंने सीता से विवाह किया। यद्यपि उनका जन्म एक शाही परिवार में हुआ था, फिर भी हिंदू ग्रंथों में उनके जीवन का वर्णन अप्रत्याशित परिवर्तनों जैसे गरीब और कठिन परिस्थितियों में निर्वासन, नैतिक प्रश्नों और नैतिक दुविधाओं से चुनौती के रूप में किया गया है। उनके सभी कष्टों में से, सबसे उल्लेखनीय राक्षस-राजा रावण द्वारा सीता का अपहरण है, जिसके बाद राम और लक्ष्मण द्वारा उनकी स्वतंत्रता हासिल करने और बड़ी बाधाओं के बावजूद दुष्ट रावण को नष्ट करने के दृढ़ और महाकाव्य प्रयास किए गए। राम, सीता और उनके साथियों की पूरी जीवन कहानी व्यक्ति के कर्तव्यों, अधिकारों और सामाजिक जिम्मेदारियों पर प्रतीकात्मक रूप से चर्चा करती है। यह मॉडल पात्रों के माध्यम से धर्म और धार्मिक जीवन को दर्शाता है।

बाद के अध्याय, 'नीरवध्यान वधू उर्मीला' ने साहित्य जगत का ध्यान उर्मिला के बारे में आकर्षित किया। कुवेम्पु का “पेन्थानम ताने नीनालादुर्मिलेयाल्टु; तुम कलम की तरह हो. ...देवा मानव सकल लोक संस्तुति समर्थन सीता तपके मिगिल निन अख्यातमा दीर्घमौनाव्रतम्! "भ्रातृभक्तिय सभ्रमाधिक्यदोल तेयप भिरकोलवुदं थां भजनलथे?" ये प्रश्न हमारे मन में हैं, लेकिन कवि कुवेम्पु, जो इन्हें स्वतंत्र रूप से पूछते हैं, एक पुरुष के रूप में भी महिलाओं के दिलों के करीब आते हैं।

कुवेम्पु विवाह में लैंगिक समानता का एक मॉडल प्रस्तुत करता है, जैसे सीता के अग्नि में प्रवेश करने के मामले में। कुवेम्पु के शब्दों को यहाँ उद्धृत करना उचित है। ``हमारे सभी कवियों की रचनाओं में यह देखने को मिलता है कि नारी के पतन की प्रवृत्ति सार्वभौमिक है। यदि राम के लिए राम से दूर सीता के व्यवहार के बारे में संदेह करना स्वाभाविक है, तो सीता के लिए राम के सीता के प्रति व्यवहार के बारे में संदेह करना भी स्वाभाविक है। कुवेम्पु आगे कहते हैं और स्पष्ट करते हैं कि ``सीता-राम के अग्नि में प्रवेश को एक भौतिक घटना के रूप में सोचने की आवश्यकता नहीं है।" इस घटना से हमें यह संदेश समझना चाहिए कि नैतिकता पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं पर भी लागू होती है। जैसे-जैसे हम गहराई से पढ़ते हैं, श्री रामायण दर्शनम से नारी मन का दर्शन भी उजागर होता है।

'अग्नि-प्रवेश' (अग्नि-परीक्षा) प्रकरण उपरोक्त कथन को दर्शाता है। सीता के आदेश पर , लक्ष्मण उनके लिए चिता बनाते हैं और सीता उस पर चढ़ती हैं। इसी बिंदु पर कुवेम्पु वाल्मिकी से एक आश्चर्यजनक विचलन करता है। जिस क्षण सीता ने अग्नि को सर्वोच्च आहुति दी, राम भी उनके पीछे दौड़े और धधकती आग में प्रवेश कर गए, जिससे सभी सांसारिक दर्शक आश्चर्यचकित रह गए। हालाँकि, एक क्षण में, राम अपने दाहिने हाथ में सीता की हथेली पकड़कर अग्नि से बाहर आते हैं और दर्शकों को उनकी दिव्यता की झलक मिलती है। इस सनसनीखेज नवाचार के द्वारा कुवेम्पु ने कानून की सर्वोच्चता के महान सिद्धांत और कानून के समक्ष सभी की समानता की घोषणा की है, केवल कानून देने वाले को छोड़कर नहीं। इससे भी अधिक, यदि इस 'अग्नि-प्रवेश' का उद्देश्य पूरी दुनिया को सीता की पवित्रता का सच बताना है, तो इसका उद्देश्य सीता के प्रति राम की निष्ठा और प्रेम को भी प्रकट करना है।

कुवेम्पु सर्वोदय के विचार को व्यक्त करते हैं, जिसमें प्रत्येक अंतिम व्यक्ति को विकास प्रक्रिया का हिस्सा बनना है। कुवेम्पु ने महाकाव्य तब लिखा जब भारत स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहा था। इस तरह कुवेम्पु अपने लेखन के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बन गए हैं ।

रामायण के अपने रूपांतरण में, हिंदू भगवान राम भी खुद को परखने के लिए सीता के साथ अग्नि में कूद जाते हैं, जो कुवेम्पु के 'सर्वोदय' या सार्वभौमिक उत्थान के दृष्टिकोण को परिभाषित करता है।

कुवेम्पु की महान कृति श्री रामायण दर्शनम ने उन्हें ज्ञान पीठ प्रशस्ति दिलाई। यह कला का एक अमर कार्य बना हुआ है, यहां कुवेम्पु ने सभी अलग-अलग पात्रों को नए आयाम देते हुए, अपरंपरागत तरीके से वाल्मिकी की रामायण को फिर से बनाया है।

निष्कर्ष: इस तरह हम देख सकते हैं कि दोनों राष्ट्र कवि श्री कुवेंपू और श्री मैथिली शरण गुप्त ने वाल्मिकी रामायण को एक नया आयाम दिया है।
दोनों कवियों उर्मिला को नायिका माना है। उन्होंने अपने साहित्य में नारी समानता की बात करके नारी पात्र को सार्वभौमिक स्थान दिया है। इनके कारण आज के समय में भी रामायण की महिमा अधिक हो रहा है।

****